विशेषता शर्मा

"सौगात "

आकाश में पूर्व दिशा से सूरज का आगमन हो चुका था, चिड़ियों ने अपने घोंसलो को छोड़ कर नन्हें- नन्हें पंखों से उड़ान भर ली थी, फूलों ने खिल खिलाकर मुस्कुराना शुरू कर दिया था। और ये सब देख कर इधर आंगन में बैठा अर्पित मन ही मन मुस्कुरा रहा था। अर्पित आज बहुत प्रसन्न था। लेकिन उसकी प्रसन्नता का कारण केवल यह सवेरे का सौंदर्य ही नहीं था बल्कि आज की सुबह उसे इसीलिए भी खूबसूरत लग रही थी क्योंकि ये सवेरा उसके लिए अट्ठारहवें जन्मदिन का तोहफा भी लाया था। घर में ज़ोर- शोर से तैयारीयां चल रही थी, ताकि अर्पित का यह दिन यादगार बनाया जा सके। घर के सभी लोग मम्मी, पापा, दीदी, भैया, चाची, ताई सभी, कोई रसोई में पकवान बनाने की तैयारी कर रहा था तो कोई घर की साज सज्जा में तल्लीन। शाम को तो बहुत सारे मेहमान भी आने वाले थे। यानि कुल मिलाकर जन्मदिन का आयोजन पूरे परिवार, रिश्तेदारों, सगे- संबंधियों और दोस्तों के साथ मिलकर मनाया जाने वाला था। ऐसे में जहाँ सभी अपने अपने कामों में व्यस्त थे, अर्पित अकेला बैठा- बैठा सभी को इस तरह तल्लीनता से काम करते हुए देख बहुत खुश था। लेकिन अचानक ही उसके चेहरे पर सूरज की लालिमा की जगह उदासी ने ले ली। अपने ही जन्मदिवस पर वह स्वयं कुछ भी कर पाने की स्थिति में नहीं था। यही सोचते विचारते वो अतीत की गहराईयों में पहुँच गया कि किस तरह बचपन में की गयी उसकी एक ज़रा सी ज़िद और लापरवाही ने उसका एक पैर ही हमेशा के लिए उससे छीन लिया था। जब वो लगभग बारह वर्ष का रहा होगा तभी उसने साईकिल चलाना सीखा लिया था और सिर्फ सीखने तक ही सीमित नहीं था बल्कि साईकिल से वो तरह तरह के स्टंट करके सभी को आश्चर्यचकित भी कर दिया करता था। उसके इस तरह किये गए स्टंट्स को देखकर उसके परिवारीजन भी बहुत प्रसन्न हुआ करते थे और आने- जाने वालों को भी दिखाया करते थे। यहाँ तक तो ठीक था लेकिन इस छोटी सी उम्र में उसने ज़िद से वो जो बाइक वाला स्टंट किया था ना.... ऐसा सोचते ही अर्पित ने ज़ोर से अपनी आँखें बंद कर लीं। ऐसा लगा जैसे वो पीड़ा से कराह उठा हो। आगे सोचने की उसकी शक्ति ही क्षीण हो गयी हो। दरअसल, यही वो हादसा था, जो आज उसके इस तरह बैठने की वजह था, इसी हादसे में अर्पित का पैर..... सोचते सोचते उसकी खुशी से चमकने वाली आँखों से अश्रु के मोती झर झर बहने लगे। यही कारण था कि आज जबकि घर के सभी सदस्य कामों में व्यस्त थे और वो असहाय बैठा सबको देख रहा था लेकिन उनकी कुछ भी मदद कर पाने में असमर्थ था। उसकी यही असमर्थता चेहरे पर दर्द बनकर आँसू के रूप में उसकी आँखों से टपक रही थी। तभी अख़बार वाले ने अख़बार फ़ेंका, जो सीधे अर्पित के पास आकर गिरा। अख़बार पढ़ते ही उसकी आँखों की चमक वापस आ गयी। क्या चुनाव आने वाले हैं...? अब चूकिं वो भी अट्ठारह वर्ष का हो चुका है तो इस बार वो भी अपना मत पत्र बनवायेगा और अपने मताधिकार का प्रयोग अवश्य करेगा। यही सोचते सोचते वो एक अलग तरह की उमंग से भर गया। अब वो भी अपना वोट डालकर अपने मन- पसन्द प्रत्याशी को चुन सकेगा। एक ऐसा प्रतिनिधि जो उनके क्षेत्र का विकास कर सके, ईमानदार और कर्तव्यनिष्ठ हो, जनता का हित चिंतक हो और अगर उसे कोई भी उम्मीदवार पसन्द नहीं हुआ तो वो नोटा का बटन भी तो दबा सकता है। अब उसका भी एक वोट देश के लिए एक अच्छा उम्मीदवार चुनने के काम आयेगा। वो भी अपने अधिकार का प्रयोग कर सकता है। क्योंकि मतदान हमारा संवैधानिक अधिकार जो है। लेकिन ये क्या...?? सोचते- सोचते अर्पित सहसा फिर उदास हो गया।

कैसे... कैसे जा पाएगा वो वोट डालने? वो तो अब गाड़ी भी नहीं चला सकता। कहीँ ऐसा तो नहीं जैसे वो अपने घर के कामों में योगदान नहीं दे पा रहा है, ऐसे ही देश के लिए भी.... ?? वो ये सब सोच ही रहा था कि रिश्ते की एक भतीजी जो उम्र में उससे थोड़ी बड़ी थी लेकिन वो भी अपने मताधिकार का प्रयोग पहली बार ही करने वाली थी,

अर्पित के पास आकर धीरे से बोली.... "कहिए चाचू आज के दिन भी कोई इस तरह परेशान होता है भला...?? आज तो आपका अट्ठारहवां जन्मदिन है और अब तो आप एक अच्छे मतदाता का अधिकार भी रखते हैं। चुनाव भी नज़दीक् ही हैं, तो क्या आप खुश नहीं हैं..दो - दो खुशियाँ एक साथ पाकर... ??" "दो - दो खुशियाँ...? अर्पित ने पूछा। "हाँ... हाँ... दो - दो खुशियाँ, एक तो आपके अट्ठारहवें जन्मदिन की और दूसरी अब आप अपने मताधिकार का प्रयोग कर सकते हैं क्या ये ख़ुशी की बात नहीं है?? " अर्पित की भतीजी ने कहा।

सुनकर अर्पित थोड़ा झिझकते हुए बोला... "हाँ खुशी की बात तो है.. लेकिन मैं वोट डालने कैसे जा पाऊँगा..?. "

“जा पाएँगे चाचू, बिल्कुल जा पाएँगे.... क्या आप नहीं जानते कि हमारी सरकार दिव्यांगों की भागीदारी बढ़ाने के लिए प्रभावी कदम उठा रही है। चुनाव आयोग की सुलभ चुनाव और कोई मतदाता मतदान से वंचित न रह जाए की थीम पर चुनावी व्यवस्था की तैयारी में जुटा प्रशासन दिव्यांगजनों को मतदान केंद्रों पर विशेष सुविधाएं मुहैया करवाएगा। देश के सभी दिव्यांगजन मतदान में भाग लेकर सुगमता से अपने मताधिकार का प्रयोग कर सके। इसके लिए सभी जरूरी प्रबंध किए जा रहे हैं।

मतदान केंद्रों पर दृष्टिबाधित मतदाताओं के लिए ईवीएम पर ब्रेल लिपि मुद्रित साइनेज की व्यवस्था होगी। जिले के प्रत्येक मतदान केंद्र पर डमी बैलेट शीट उपलब्ध होगी। इसकी मदद से वे किस उम्मीदवार को अपना वोट देना चाहते हैं। डमी बैलेट शीट से जान सकते हैं। ईवीएम का बटन दबाते ही बीप की आवाज से वोट डालने का पता लगा लेंगे। इसके अतिरिक्त श्रवण बाधितों को ईवीएम का बटन दबाते ही लाइट संकेतक से वोट डालने का पता लग जाएगा। उनके लिए मतदान केंद्रों पर विजुअल संकेतक लगाए जाएंगे।“

"अच्छा...!!"अर्पित ने आश्चार्यचकित होकर कहा। प्रसन्नता से प्रफुल्लित अर्पित की भतीजी उमंग से झूमती हुई बोली.. " हाँ..! और पता है दिव्यांग मतदाताओं के लिए मतदान केंद्रों में व्हीलचेयर, रेलिग, रैंप आदि की व्यवस्थाएं की गई हैं। मतदान केंद्र तक लाने एवं वापस घर छोड़ने के लिए प्रशासन वाहन सुविधा उपलब्ध करवाएगा। चुनाव में मतदान प्रतिशत बढ़ाने के लिए दिव्यांगजनों की भागीदारी तय की जा रही है। प्रशासन द्वारा सभी मतदान केंद्रों में दिव्यांगों के लिए विशेष सुविधा के प्रबंध किए जा रहे हैं।

अब बताईए चाचू... अब तो आपकी खुशी तीन गुनी हो गयी होगी ना.... ? "

तभी सूरज की एक किरण ने अर्पित का चेहरा ख़ुशी से चमका दिया। ये किरण उसके अट्ठारहवें जन्मदिन की सबसे बड़ी **सौगात** थी। **सुलभ चुनाव की सौगात...।**

विशेषता शर्मा
बी.एस.सी. (तृतीय वर्ष)
राष्ट्रीय स्वयं सेवक
दयालबाग एजूकेशनल इंस्टीट्यूट,
आगरा, उत्तर प्रदेश